मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 4 अप्रैल 2014

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

जम्मू में कश्मीरी साहित्य पर विमर्श एवं पुस्तक प्रदर्शनी	2
मंगलोर में तीन लेखकों से मुलाकात	2
'श्यामा चरण शुक्ल' पुस्तक का लोकार्पण	3
नई दिल्ली में ई-पुस्तकों पर संगोष्ठी	3
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय	4
कोंडागाँव, बस्तर : चेंदू से लेकर नोआखाई तक उभर आया बस्तर के चित्रों में	5
केंद्रपाड़ा, ओडिशा में पुस्तक लोकार्पण	5
पुस्तक परिचय	6
रामनाथपुरम पुस्तक मेला	7
रा.पु. न्यास के चार कर्मी सेवानिवृत्त	7
चिट्ठीघर	8

किताबें मन के बंद दरवाजे खोलती हैं
ताजा हवा घोलती हैं
जीवन में रंग भरती हैं
मौन रहकर भी बहुत कुछ कहती हैं।

नवीनतम प्रकाशन

श्यामा चरण शुक्ल
सुशील त्रिवेदी
पृ. 236 ₹ 220
ISBN 978-81-237-7068-0

गुवाहाटी में रा.पु. न्यास का पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने असम के गुवाहाटी में एक नया पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र स्थापित किया है। पुस्तकोन्नयन के लिए समर्पित न्यास के पूर्वोत्तर में इस केंद्र (ग्रंथ विकास केंद्र) की स्थापना असम राष्ट्रभाषा प्रसार समिति भवन, हेदायतपुर, गुवाहाटी में की गई है।

इस केंद्र का उद्घाटन 15 मार्च, 2014 को आयोजित एक समारोह में गुवाहाटी यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. मृदुल हजारिका ने किया। अपने उद्घाटन-संबोधन में उन्होंने कहा कि यह केंद्र छात्रों को पुस्तकों की दिलचस्प दुनिया की ओर आकर्षित करेगा। उन्होंने कहा कि पुस्तक संस्कृति की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रख्यात साहित्यकार एवं कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकोन्नयन के लिए निभाई जा रही भूमिका की सराहना करते हुए पाठकों से आह्वान किया कि वे इस केंद्र की सुविधाओं का पूरा लाभ उठाएँ। असम राष्ट्रभाषा प्रसार समिति के मंत्री एवं कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि डॉ. खिरादा कुमार सैकिया ने न्यास को असम में पुस्तकोन्नयन एवं पठन आदत के विकास में हर संभव सहयोग करने की बात कही।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में न्यास-अध्यक्ष एवं प्रख्यात मलयालम लेखक श्री ए. सेतुमाधवन ने कहा कि यह केंद्र केवल एक और पुस्तक विक्रय का केंद्र नहीं बनेगा, बल्कि यह पुस्तकों के लिए समर्पित विभिन्न संस्थाओं के लिए पुस्तक प्रोन्नयन कार्यक्रमों एवं साहित्यिक बैठकों को प्रोत्साहित करने वाले केंद्र के रूप में काम करेगा।

इससे पहले, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने देश के विभिन्न राज्यों में पुस्तक प्रोन्नयन हेतु स्थापित किए जा रहे इसी तरह के अन्य प्रोन्नयन केंद्रों की न्यास की योजना के बारे में बताया।

कार्यक्रम में न्यास द्वारा असमिया भाषा में प्रकाशित छह पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। ये पुस्तकें थीं : *रैंडम क्यूरियोसिटी; ईजी गाइड टू ईयर, नोज एंड थ्रोट; द ग्रेट हेज ऑफ इंडिया; सुभद्रा कुमारी चौहान की श्रेष्ठ कहानियाँ; मुल्क राज आनंद : रोल एंड एचीवमेंट* तथा *द मेकिंग एंड वर्किंग ऑफ इंडियन कंस्टीट्यूशन।*

कार्यक्रम का समन्वय न्यास में असमिया भाषा संपादक श्री दीप सैकिया ने किया।

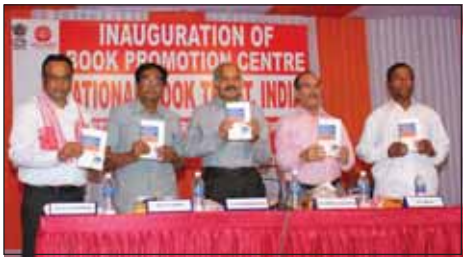

जम्मू में कश्मीरी साहित्य पर विमर्श एवं पुस्तक प्रदर्शनी

जम्मू स्थित जम्मू यूनिवर्सिटी परिसर में 2-3 दिसंबर, 2013 के दौरान राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित एक पैनल विमर्श में विशेषज्ञों की चर्चा में यह बात उभरकर आई कि उत्तर भारत की सर्वाधिक प्राचीन भाषा होने के नाते कश्मीरी क्लासिकल भाषा का दर्जा पाने के योग्य है। विमर्श में कही गई बातों का सारांश रहा कि–कश्मीरी भाषा सात सौ वर्षों से अधिक के अपने प्रकाशित रूप के साथ एक समृद्ध विरासत का स्वामी है। कश्मीरी कविता का इतिहास अँग्रेजी भाषा से भी पुराना है और इस भाषा ने 14वीं सदी में अंतरराष्ट्रीय स्तर के कवियों, यथा–ललद्यद एवं शेखुल आलम को पैदा किया। कश्मीर के इन संत कवियों की दृष्टि और अभिव्यक्ति इस स्तर और ऊँचाई की थी जो इस बात को प्रमाणित करती है कि इस भाषा की साहित्यिक अभिव्यक्ति की एक सुदीर्घ परंपरा और विरासत रही है।

पैनल विमर्श के इस आयोजन में न्यास को जम्मू यूनिवर्सिटी का सहयोग मिला। इस विमर्श के आयोजन के साथ ही न्यास द्वारा धन्वंतरी लाइब्रेरी में एक तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

सेंटर फॉर शेखुल आलम स्टडीज, कश्मीर यूनिवर्सिटी के समन्वयक डॉ. अजीज हजिनी के अनुसार, कश्मीर के रहस्यवादी कवियों ने शताब्दियों तक अपनी अभिव्यक्तियों के माध्यम से कश्मीरी भाषा को अपनी विशिष्ट आध्यात्मिक विचारधारा और विशिष्ट शैली से समृद्ध किया। कश्मीरी कवियों ने कविता की दर्जनभर से अधिक विधाओं को अपनाया और उन्हें अपनी संवेदनाओं और अभिव्यक्तियों से सिंचित किया। कश्मीरी भाषा ने आज के समय में और अधिक ऊँचाई तब पाई जब 2006 में कवि प्रो. रहमान राही को ज्ञानपीठ सम्मान से नवाजा गया।

श्री आलम ने आगे कहा–यह समय की माँग है कि इस भाषा में ज्ञानात्मक पुस्तकें तैयार की जाएँ, ताकि छात्रों को उनकी मातृभाषा में अधिक-से-अधिक ज्ञान प्राप्त हो सके।

कमर्शियल ब्रॉडकास्टिंग सर्विस, रेडियो कश्मीर, श्रीनगर की निदेशक एवं कश्मीरी-उर्दू की प्रख्यात कवयित्री रुखसाना जमील ने ललद्यद और हब्बा खातून जैसी प्रारंभिक कवयित्रियों से लेकर समकालीन कवयित्रियों, यथा–नसीम शिफे एवं जेबा जीनत तक के नामों का उल्लेख करते हुए बताया कि कश्मीरी महिला साहित्यकारों का कश्मीरी भाषा को समृद्ध करने में बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने कहा, "जब हम कश्मीरी लोक साहित्य पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि कश्मीर की सभी महिलाओं ने इसके विकास में पर्याप्त रूप से अपनी भूमिका निभाई है।"

दिल्ली के प्रख्यात भाषाविद् प्रो. ओ.एन. कौल ने कहा कि कश्मीरी भाषा की व्याकरणिक संरचना यूरोपीय क्लासिकल भाषा यिद्दीश के समान है और अनेक यूरोपीय विद्वान कश्मीरी भाषा एवं साहित्य में रुचि दिखा रहे हैं।

श्री मंसूर बनिहाली, श्री बशीर बद्रवाही एवं मो. रफी (स्कूली शिक्षा विभाग के सलाहकार) ने भी इस अवसर पर अपनी बातें रखीं।

दूसरे दिन 'अनुवाद' विषय पर विमर्श के क्रम में विशेषज्ञों के विचार थे–कश्मीरी भाषा में अनुवाद की सुदीर्घ परंपरा रही है। धार्मिक पुस्तकों एवं भक्ति साहित्य के अलावा क्लासिकल साहित्य, जैसे *शाहनामा* (पर्शियन) के फिरदौसी द्वारा एवं *पंज गुंज* (पाँच खजाने) के निजामी द्वारा किए गए अनुवाद कश्मीरी भाषी लोगों को 19वीं-20वीं सदी में ही प्राप्त हो गए थे। अब ज्ञानात्मक पुस्तकों के अनुवाद की आवश्यकता है।

प्रख्यात कश्मीरी कवि एवं जम्मू-कश्मीर विधान परिषद के पूर्व उप सभापति मो. यूसुफ तेंग ने कहा–यदि कश्मीरी को क्लासिकल भाषा का दर्जा मिलता है तो हमें अच्छे अनुवादकों की आवश्यकता होगी जो कश्मीरी साहित्य में उपलब्ध समृद्ध सामग्री के संबंध में जागरूकता का निर्माण कर सके।

प्रख्यात कश्मीरी लेखक डब्लू.एम. असीर ने कहा कि कश्मीरी साहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं तथा यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद के अलावा डोगरी व लद्दाखी में भी अनुवाद होना चाहिए। यह अनुवाद इसके उलट भी हो। इससे साहित्य समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि रा.पु. न्यास एवं साहित्य अकादेमी इस क्षेत्र में अच्छा काम कर सकता है।

संपादक और अनुवादक श्री बी.एन. बेताब ने कहा कि साहित्य का अनुवाद हमें न केवल विविध साहित्यिक सामग्री उपलब्ध कराता है बल्कि यह एक जरिया भी है जिसके माध्यम से हम एक-दूसरे की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अवगत हो पाते हैं।

प्रख्यात अकादेमिक एवं अनुवादक प्रो. प्यारे लाल हताश ने जम्मू-कश्मीर सरकार से आग्रह किया कि वह अनुवाद कार्य को पूर्णतः समर्पित एक संस्थान की स्थापना करे।

सेंटर फॉर शेखुल आलम स्टडीज, कश्मीर यूनिवर्सिटी, श्रीनगर के समन्वयक डॉ. अजीज हजिनी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

2 से 4 दिसंबर तक रा.पु. न्यास द्वारा धन्वंतरी लाइब्रेरी के सहयोग से एक पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई। जम्मू यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री एम.पी.एस. इशार यह प्रदर्शनी देखने आए और अपने संवाद में शिक्षकों-छात्रों से पाठ्यपुस्तक से इतर पुस्तकें पढ़ने का आह्वान किया।

इन कार्यक्रमों का न्यास में अँग्रेजी संपादक श्री द्विजेंद्र कुमार ने समन्वय किया।

मंगलोर में तीन लेखकों से मुलाकात

4 से 12 जनवरी, 2014 के दौरान आयोजित मंगलोर पुस्तक मेला में पुस्तकप्रेमियों को अपने तीन लोकप्रिय लेखकों से मुलाकात का अवसर मिला। कन्नड़ भाषा के ये तीन नामचीन लेखक थे–श्री फकीर मोहम्मद कटपदी, श्री जयंत कैकिनी एवं डॉ. मल्लिका घंटी।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित इस पुस्तक मेला के पहले दिन (4 जनवरी) पुस्तकप्रेमियों को श्री फकीर मोहम्मद कटपदी से संवाद का अवसर मिला। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से अपनी लेखनी में पाठकों को मुस्लिम दुनिया से परिचित कराने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि किसी भी पंथ या संप्रदाय के प्रति कोई पूर्व धारणा नहीं रखनी चाहिए।

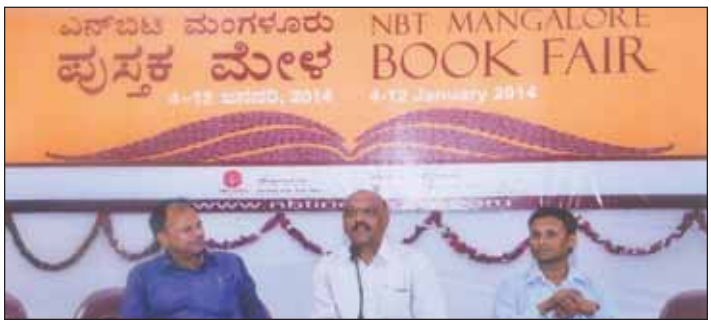

दूसरे दिन (5 जनवरी) श्री जयंत कैकिनी अपने पाठकों से मिले और बतियाए। उन्होंने अपने संबोधन में बच्चों के लिए प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षण के महत्व पर जोर दिया। वे एक स्वस्थ समाज के लिए पुस्तक पठन आदत के महत्व पर भी बोले।

तीसरे दिन (6 जनवरी) डॉ. मल्लिका घंटी ने एक स्त्री लेखक होने के अपने अनुभव को पाठकों से साझा किया। एक ग्रामीण पृष्ठभूमि का होने के नाते और एक लड़की होने

की वजह से शिक्षा प्राप्ति के लिए अपने संघर्ष को भी उन्होंने पुस्तकप्रेमियों से साझा किया।

‘श्यामा चरण शुक्ल’ पुस्तक का लोकार्पण

“श्यामा चरण शुक्ल सच्चाई, ऊर्जा और सच्चरित्रता के त्रियोग से बने हुए शख्शियत थे। वे अविभाजित मध्य प्रदेश के विकास के योजनाकर्ता थे। मध्य प्रदेश के विकास का ‘मास्टर प्लान’ उन्होंने ही तैयार किया था।” राज्यसभा सदस्य और पूर्व मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश के ये शब्द थे। वे राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित पुस्तक *श्यामा चरण शुक्ल* (जीवनचरित) के लोकार्पण-अवसर पर बोल रहे थे। विदित हो कि मध्य प्रदेश के ‘विकास पुरुष’ कहे जाने वाले, राज्य के तीन बार मुख्यमंत्री रहे, श्यामा चरण शुक्ल का यह जीवनचरित न्यास द्वारा हाल ही में प्रकाशित किया गया। पुस्तक के लेखक हैं पूर्व वरिष्ठ भा.प्र.से., डॉ. सुशील त्रिवेदी। पुस्तक का लोकार्पण नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की अवधि में, 17 फरवरी, 2014 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के मल्टीपर्पस हॉल में हुआ।

श्यामा चरण शुक्ल फाउंडेशन, रायपुर के बैनर तले आयोजित इस लोकार्पण समारोह में अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में श्री दिग्विजय सिंह ने राज्य के लिए किए गए शुक्ल जी के कार्यों को याद किया और कहा कि आज का आधुनिक मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ श्री शुक्ल की कल्पना और उनके सपनों का प्रतिरूप है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष और कृषि राज्य मंत्री श्री चरणदास महंथ ने इस अवसर पर अपने भावोद्‌गार व्यक्त करते हुए श्यामा चरण शुक्ल को बार-बार याद किया। श्री महंथ ने कहा कि उनके पिता शुक्ल मंत्रिमंडल में मंत्री थे और इस नाते उनका शुक्ल परिवार से पारिवारिक रिश्ता भी था, यह रिश्ता आज भी कायम है। श्यामा चरण जी को प्रदेशवासी प्यार से ‘श्यामा भैया’ कहते हैं इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उनका व्यवहार सबके प्रति समान भाव वाला रहता था, सो, सच ही वे सबके लिए ही ‘श्यामा भैया’ थे।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे छत्तीसगढ़ राज्य काँग्रेस के अध्यक्ष श्री भूपेश बघेल। इन्होंने भी श्यामा चरण जी के जीवन और कार्यों तथा राज्य के लिए किए गए उनके अवदानों को याद किया। वक्ताओं ने एक स्वर में श्यामा चरण शुक्ल को अविभाजित मध्य प्रदेश का निर्माणकर्ता और विकासकर्ता बताया। राज्य में नदी और जल क्षेत्र में किए गए उनके योगदान पर लगभग सभी वक्ताओं ने उन्हें याद किया।

श्यामा चरण जी के सुपुत्र भी अमितेश शुक्ल भी इस अवसर पर बोले। उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री, नीति नियोजनकर्ता और अपने पिता, श्यामा चरण को अनेक रूपों में याद किया। उन्होंने कहा कि श्यामा चरण उनके पिता थे, लेकिन वे (श्यामा चरण) पूरे प्रदेश को अपना परिवार समझते थे। प्रदेश की जनता भी उनमें अपना ‘अभिभावक’ देखती थी। श्री अमितेश ने कहा, “उनकी सोच और उनके विचार को आज बढ़ाने की जरूरत है।”

अंत में, आभार ज्ञापन श्यामा चरण जी की सुपुत्री श्रीमती उमा तिवारी ने व्यक्त किया। उमा जी ने इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का भी आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर न्यास के प्रतिनिधि के रूप में, लोकार्पित पुस्तक के संपादन कार्य से जुड़े, न्यास में हिंदी संपादक, श्री दीपक कुमार गुप्ता भी उपस्थित थे।

विदित हो कि लोकार्पण कार्यक्रम से पूर्व सभागार में श्यामा चरण शुक्ल जी के जीवन एवं कार्यों पर आधारित एक वृत्त चित्र का भी प्रदर्शन किया गया।

नई दिल्ली में ई-पुस्तकों पर संगोष्ठी

“आज ई-पुस्तक एक वास्तविकता है।” बलानी इन्फोटेक के निदेशक श्री कैलाश बलानी ने नई दिल्ली में एक संगोष्ठी में यह कहा। “विदेशी प्रकाशक अपनी पुस्तकें बड़े पैमाने पर बेच रहे हैं जबकि भारतीय प्रकाशक उस पैमाने पर अपनी किताबें नहीं बेच पा रहे हैं। और यह स्थिति तब है जब हमारे पास गुणवत्तापूर्ण सामग्री की कोई कमी नहीं।” उन्होंने आगे कहा। वे नई दिल्ली में गोएथे इंस्टीटुट/मैक्समूलर भवन; राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत; जर्मन बुक ऑफिस, नई दिल्ली तथा एकेडमिक डेस ड्यूट्‌शेन बुशान्डेल्स के संयुक्त तत्वावधान में ई-प्रकाशन पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रहे थे।

बड़ी मात्रा में मुद्रित सामग्री का डिजिटलीकरण कर उसे डिजिटल प्लेटफार्म पर डालने वाले श्री बलानी ने कहा “भारत में ई-पुस्तकों का सर्वाधिक बड़ा बाजार उत्तर-पूर्व क्षेत्र है। ऐसा इन क्षेत्रों में प्रवेश की दुर्गमता के कारण है; उदाहरण के लिए नगालैंड। इन क्षेत्रों में पाठकों तक पहुँचने का सर्वाधिक सुगम माध्यम ई-प्रकाशन है।”

इस अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने कहा, “ई-पुस्तकें समय की जरूरत हैं। चूँकि हमारी आबादी का 60 प्रतिशत युवा है और वे अधिकतर टेक्नोलॉजी प्रेमी हैं ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि हम उन्हें उन्हीं के पसंदीदा प्रारूप में पुस्तकें उपलब्ध कराएँ। ...इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास पहले से ही अपनी लगभग 300 पुस्तकों को ई-पुस्तकों में परिवर्तित करने के उपक्रम में लगा हुआ है। माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. एम.एम. पल्लम राजू ने ई-पुस्तक के क्षेत्र में पहले कदम के रूप में स्वामी विवेकानंद पर पुस्तक के ई-प्रारूप का लोकार्पण किया है।” उन्होंने आगे कहा, “सरकार ई-पुस्तकों को ग्रामीण क्षेत्रों में भी उपलब्ध कराने हेतु प्रयत्नशील है।”

भारतीय प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री सुधीर मल्होत्रा ने कहा, “भारतीय प्रकाशकों द्वारा डिजिटल प्लेटफार्म पर पुस्तकों/मुद्रित सामग्री के धीमे स्वीकरण ने भारत में टेक्नोलॉजी के रास्ते को धीमा किया है।” लेकिन उन्होंने आशा व्यक्त की कि आगामी दस वर्षों या उससे भी कम समय में हम उनसे आगे होंगे।

दिनभर चले इस कार्यक्रम का उद्‌देश्य भारत के प्रकाशन क्षेत्र के उन दिग्गजों को आपसी विचार-विमर्श का अवसर उपलब्ध कराना था जो डिजिटल प्रकाशन के क्षेत्र में अपने ज्ञान का विकास करने की ओर उन्मुख हैं। यह संगोष्ठी ई-प्रकाशन क्षेत्र की चार मुख्य चुनौतियों को लेकर थी, उदाहरणार्थ—नए प्रारूप, उत्पाद और ग्राहकों तक पहुँचने के रास्ते; व्यापार प्रारूप, नए प्रतिस्पर्धी और तकनोलॉजी नियम तथा पारितंत्र (इकोसिस्टम)।

संगोष्ठी का संचालन स्मार्टडिजिट्स के संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक हैराल्ड हेन्जिएर तथा डिजिटल पब्लिशिंग कंपीटेंस के प्रबंध निदेशक फेबिअन केर्न ने किया। इससे पहले, गोएथे इंस्टीटुट की निदेशक सुश्री उटे रीमर-बानेर ने अतिथियों का स्वागत किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

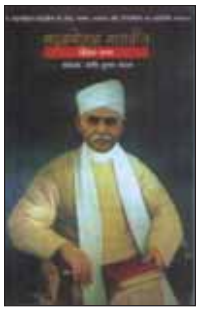

मदनमोहन मालवीय : विचार-यात्रा

संपा. : समीर कुमार पाठक पृ. 484 ₹ 270

मदनमोहन मालवीय (25 दिसंबर 1861 - 12 नवंबर 1946)– एक व्यक्ति–महान परंपरा के प्रतीक, अपने आप में एक संस्थान, स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्रीय नवजागरण के महत्वपूर्ण संदर्भ प्रस्थान, जिससे गुजरना भारतीय नवजागरण की गौरवशाली परंपरा से परिचित होना है। वे हिंदी प्रदेश के उन थोड़े से लोगों में से थे, जिनकी पहचान अखिल भारतीय थी। उनका सजग-सक्रिय राजनीतिक-सांस्कृतिक चिंतन कई दशाब्दियों तक फैला हुआ है। 1880-1940 की उनकी पूरी जीवन-यात्रा और विचार-यात्रा स्वाधीनता संग्राम की संघर्षशीलता, स्वदेशी की उद्यमशीलता, हिंदू विश्वविद्यालय के निर्माण की प्रयत्नशीलता और भारतीय राष्ट्रीयता को मजबूती देने की अंतर्कथा है। वे काँग्रेस के माध्यम से राजनीतिक-सांस्कृतिक कार्यों में सक्रिय होते हैं, *अभ्युदय, लीडर, मर्यादा* की पत्रकारिता से नवजागरण की पत्रकारिता का विकास करते हैं, प्रेस एक्ट की बर्बरता का विरोध करते हैं, स्वदेशी का उद्घोष करते हैं, भारत की आर्थिक बदहाली के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आलोचना करते हैं, हिंदू-मुस्लिम एकता के सामूहिक प्रयास का आह्वान करते हैं, हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि की वकालत करते हैं, शिक्षा का भविष्य और भविष्य की शिक्षा का ध्यान रखकर हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना करते हैं। मदनमोहन मालवीय के सभी कार्य नवजागरण की विकास यात्रा के द्योतक हैं और महत्वपूर्ण संदर्भ भी। अपने विचार चिंतन में वे पूरी भद्रता और शालीनता के साथ राष्ट्र निर्माण में तत्पर रहे और ब्रिटिश विरोध के लिए प्रतिबद्ध भी। ISBN 978-81-237-6972-1

सजावटी पत्थरों का अद्भुत संसार

राम रक्ष पाल विजयवर्गीय पृ. 136 ₹ 110

कंदराएँ एवं गुफाएँ आदिमानव की शरण रहे हैं, तभी से मानव का पत्थरों से रिश्ता बना जो सदियों से कायम है। पत्थर प्रकृति की सुंदर रचना है जो कठोर, सुगठित, मजबूत होती है और चित्ताकर्षक रंगों में सर्वत्र उपलब्ध है। कालांतर में इनके रूप, रंग, आयाम एवं उपयोग बदलते गए। प्रमुखतः निर्माण सामग्री के रूप में मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शुरू हुआ इनका उपयोग समय के साथ कई क्षेत्रों में विकसित हुआ है जिसमें पत्थर शिल्प भी एक है।

पुस्तक विभिन्न पत्थरों के उपयोग, विकसित मानकों, तकनीकी विशेषताओं, तकनीकी मापदंडों, इनके रखरखाव, पत्थर शिल्प एवं इनके विभिन्न उपयोगों के बारे में जानकारी एवं इनके चयन के सुझाव उपलब्ध कराती है। अपने मकान का सपना सँजोने वालों के लिए पत्थरों की पहचान, उनके विभिन्न उपयोग एवं उनके रखरखाव की महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करा, पुस्तक मकान को सुंदर एवं आकर्षक बनाए रखने में सहयोगी होगी। ISBN 978-81-237-6945-5

विश्व क्रिकेट और भारत

सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी पृ. 318 ₹ 145

क्रिकेट अब केवल खेल नहीं रहा, यह जुनून बन चुका है। इसमें अपार यश है, लोकप्रियता है और दौलत है। कभी गोरे अँग्रेजों का खेल कहलाने वाला क्रिकेट आज एशियाई देशों में आम आदमी की आत्मा में बस चुका है। इस खेल में देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप कई बदलाव आते रहे। इस खेल और खिलाड़ियों के साथ विवादों का तो गहरा संबंध रहा है। क्रिकेट की विकास गाथा को अतीत से वर्तमान तक सीमित पृष्ठों में समेटने का दुष्कर कार्य इस पुस्तक में किया गया है। कई दुर्लभ चित्र हैं, जोकि पुस्तक पढ़ने का रोमांच बनाए रखते हैं। इस पुस्तक में क्रिकेट के इतिहास, उसकी क्रमिक प्रगति और फैलाव तथा भारतीय उपमहाद्वीप का विश्व क्रिकेट को योगदान, विश्व के प्रमुख मैदानों एवं रिकॉर्डों जैसे विषयों को आसान भाषा में प्रस्तुत किया गया है। ISBN 978-81-237-4303-5

कहानी कहने की कला

संपा. : पंकज चतुर्वेदी पृ. 52 ₹ 70

बच्चों को कहानी सुनाना और बच्चों द्वारा उसका आनंद लेना, दोनों ही बेहद स्वाभाविक क्रियाएँ हैं, लेकिन समय के साथ बदलती तकनीकी दुनिया ने इस पारंपरिक 'पठन-पाठन प्रक्रिया' को कुछ भुला-सा दिया है। यह पुस्तक शिक्षकों, अभिभावकों और बच्चों के लिए काम करने वाली संस्थाओं के लिए प्रस्तुत है, इस बात का भरोसा एक बार फिर जताने के लिए कि कहानी कहना आज भी अपनी बात बच्चों तक पहुँचाने का प्रासंगिक और ताकतवर माध्यम है। इस पुस्तक में लेखक, मनोवैज्ञानिक, शिक्षक, संपादक, प्रसार माध्यमों से जुड़े लोगों के विचारों को शामिल किया गया है। ISBN 978-81-237-7048-2

सुर जो सजे...

राजेश कुमार व्यास पृ. 238 ₹ 230

हिंदी फिल्म संगीत को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने और उसमें निहित सृजन की सोच पर *सुर जो सजे* अपने ढंग की मौलिक और निराली पुस्तक है। लेखक ने इसमें फिल्म संगीत के बहुत-से स्तरों पर अब तक अनकहे इतिहास को संस्मरण संवाद की अपनी विशिष्ट शैली में संजोया है। लोकप्रिय फिल्मी गीत के इतिहास के अंतर्गत उसकी धुन, उसके लिखे जाने और उसे संगीतबद्ध किए जाने के पीछे की कोई कथा, कोई व्यथा या अन्य कोई घटना, प्रसंग का इसमें रोचक वर्णन है। पुस्तक की शुरुआत फिल्म संगीत से जुड़ी हस्तियों के संस्मरण-संवाद से होती है। ...और फिर शुरू होती है फिल्मी गीतों से जुड़ी 'सरगम' की रोचक दास्ताँ। 'सुर जो सजे' लेखक की संगीत रुचि की अंतर्यात्रा है। पढ़ते हुए लगेगा आप भी संगीत सृजन की उनकी इस यात्रा में साथ हैं। पुस्तक में संगीतकारों, गीतकारों के साथ हुए लेखक के संवाद, अनुभवों के संस्मरण में प्रस्तुत किए गए हैं। ISBN 978-81-237-7081-9

बस्तर का आदिवासी एवं लोक संगीत

हरिहर वैष्णव पृ. 300 ₹ 315

'बस्तर'–कहते हैं कि यहाँ जो बसता है, तर जाता है। एक तरफ महाराष्ट्र तो दूसरी ओर उड़ीसा, तीसरी ओर आंध्र प्रदेश और चौथी दिशा में छत्तीसगढ़ से घिरे बस्तर अंचल के लोक जीवन, संगीत, परंपराओं, भाषाओं पर बेहद मिश्रित प्रभाव हैं। बस्तर के आदिवासी और लोक कई-कई पीढ़ियों से वनों पर आश्रित रहे और उनके जीवन में भी इसी तरह की नैसर्गिकता भीतर तक समाई हुई है। दुनियाभर की जनजातियों की ही तरह बस्तर में भी संगीत-नृत्य, गायन-वादन का बेहद महत्व है। संगीत के आदिजनक के रूप में गोंडी संस्कृति में लिंगों पेन और भतरी परिवेश में बुढ़ा देव का नाम आता है। कहीं-न-कहीं ये दोनों ही नटराज के ही अवतार हैं। धार्मिक कर्मकांड, देवोपासना, सामाजिक संस्कार, खेती कर्म या फिर यूँ ही समय के साथ साक्षात्कार करना हो; हर अवसर पर बस्तर के लोगों के पास गीत-नृत्य-वाद्य-नाट्य उपलब्ध हैं और यह सारा ज्ञान अंचल के चप्पे-चप्पे में बिखरा पड़ा है। कई दुर्लभ चित्रों व रेखांकन से सज्जित यह पुस्तक लेखक द्वारा इस दिशा में कोई तीन दशकों से किए जा रहे शोध का परिणाम है। ISBN 978-81-237-6941-7

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और
उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों
के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

कोंडागाँव, बस्तर : चेंद्रू से लेकर नोआखाई तक उभर आया बस्तर के चित्रों में

कहीं बाघ के साथ बचपन बिताने के लिए मशहूर रहे असली जीवन के हीरो चेंद्रू मंडावी की कहानी है तो कहीं हरियाली अमावस की झलकी, तो कहीं खन-खन करने वाले घुँघरू की कहानी। बस्तर के लोक चित्रकारों ने इस अंचल के सभी रंग अपनी पारंपरिक शैली में रंगों के माध्यम से उकेर दिए हैं। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा जिला प्रशासन, कोंडागाँव के सहयोग से संपन्न तीन दिवसीय (25-27 मार्च, 2014) चित्रांकन-अनुवाद कार्यशाला में ये रंग उभरकर आए हैं। उल्लेखनीय है कि इन तीन दिनों में दस पांडुलिपियों का हिंदी व भतरी, हल्बी व गोंडी में अनुवाद, अनूदित पांडुलिपियों का संपादन व टाइप सेटिंग व चित्रांकन का कार्य संपन्न हुआ।

25 मार्च को कार्यशाला का प्रारंभ करते हुए लेखक श्री हरिहर वैष्णव ने कार्यशाला में सम्मिलित दस पांडुलिपियों के चयन की प्रक्रिया व उनकी विशेषताओं की जानकारी दी। प्रख्यात चित्रकार खेम वैष्णव ने बताए कि किस तरह बस्तर के लोक चित्र, अन्य चित्रों से भिन्न हैं। उन्होंने कहा कि लोक की भावना समूह की होती है और जिस कला को समूह ने आत्मसात किया वही लोक कला होती है। चित्र किस तरह बनाए जाएँ और पुस्तक के चित्र बच्चों के लिए किस तरह भाषा, ज्ञान व मनोरजंन का माध्यम बनते हैं, इस तरह की तकनीकी जानकारी कार्यशाला के संचालक व राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के संपादक पंकज चतुर्वेदी ने दी। इस कार्यशाला में सहभागी चित्रकार थे–रामेश्वर बघेल, राजेन्द्र राव राउत, रागिनी वैष्णव, खेम वैष्णव, संतूरात कोर्राम, सुश्री लतिका वैष्णव, संतोष गालिब, नंदलाल चुरेन्द्र, सरला यादव, अशोक कुमार ठाकुर, दिनेश कश्यप, महेश कुमार कश्यप और डमरू भारद्वाज। अनुवादक हैं–उग्रेश कुमार मरकाम, नरपति पटेल और नंदिता वैष्णव।

'चेंदरू आरू बाग पिला' पांडुलिपि पर राजेंद्र राव राउत ने गढ़ बंगाल के जंगलों का जीवंत चित्र तथा चेंद्रू के बालपन में उसके बाघ के बच्चे के साथ खेल को चित्रित किया है। खेम वैष्णव ने बस्तर के प्रमुख त्योहारों को अपने रंग व आकृति में जीवंत किया है। रामेश्वर बघेल ने पेड़ लगाने के संदेश को अपनी कला के माध्यम से प्रस्तुत किया है। बीजापुर से आए कलाकार संतोष गालिब ने सरगी के पेड़ पर बच्चों को जानकारी देते हुए चित्र बनाए। अशोक कुमार ठाकुर ने बस्तर के महत्वपूर्ण संगीत-वाद्य घुंघरू पर आधारित पांडुलिपि पर चित्र बनाए हैं। 'बालमतिर भैंस' पांडुलिपि पर लतिका वैष्णव ने चित्र बनाए। मेंढक के विवाह की लोक कथा पर नंदलाल चूरेन्द्र ने चित्र बनाए हैं। सरला यादव द्वारा चित्रित कहानी अच्छे दोस्त की सीख देती है। श्री सुरेन्द्र कुलदीप ने बस्तर के मशहूर 'अमुस त्योहार' की परंपराओं को पारंपरिक कला के माध्यम से प्रस्तुत किया है। चार बाल चित्रकारों–दिनेश कश्यप, महेश कश्यप, डमरू भारद्वाज और संतूराम कोर्राम ने भी बच्चों की पुस्तकों पर चित्रांकन किए।

इस कार्यशाला के लिए हल्बी में चार व भतरी व गोंडी में तीन-तीन पांडुलिपियों का चयन किया गया था। इनका हिंदी व अन्य लोक भाषाओं में अनुवाद का कार्य श्रीमती नंदिता वैष्णव (भतरी), उग्रेश चंद मरकाम (गोंडी) और नरपति पटेल (हल्बी) ने किया। इन पांडुलिपियों का शब्द संयोजन कार्यशाला स्थल पर ही योगेश शांडिल्य ने किया।

कार्यशाला के समापन अवसर पर लेखक हरिहर वैष्णव ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास तथा जिला प्रशासन को ऐसे अनूठे आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। कार्यशाला के संयोजक व न्यास के संपादक पंकज चतुर्वेदी ने बस्तर के लेखकों, अनुवादकों और कलाकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि न्यास ने गत एक वर्ष में बस्तर की कई बोलियों में अनुवाद व मूल पुस्तकों का प्रकाशन किया है और भविष्य में भी इस अंचल की कला-संस्कृति-लेखन को पूरे देश के सामने लाने के लिए काम करते रहेंगे।

केंद्रपाड़ा, ओडिशा में पुस्तक लोकार्पण

केंद्रपाड़ा सायंकालीन महाविद्यालय, केंद्रपाड़ा के कॉन्फ्रेंस हॉल में 23 मार्च, 2014 को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा एक पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात ओड़िया उपन्यासकार एवं कथाकार प्रो. शांतनु कुमार आचार्य ने अपने संबोधन में ओड़िया साहित्य में अपने साहित्यिक अनुभव एवं अपनी साहित्यिक यात्रा को श्रोताओं से साझा किया। उन्होंने आगे कहा कि एक लेखक आभ्यंतरिक दुनिया का राजदूत होता है और वह आभ्यंतर को बाहर की दुनिया से जोड़ने की कोशिश करता है। मुख्य वक्ता, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के ओड़िया भाषा सलाहकार समिति के एक सदस्य, डॉ. विजोयानंद सिंह ने केंद्रपाड़ा के लंबे साहित्यिक विरासत एवं ओड़िया साहित्य में इसके महत्वपूर्ण अवदान पर बातें कीं।

प्रख्यात ओड़िया महिला साहित्यकार बीणापाणि महांति एवं ओडिशा साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. रामचंद्र बेहेरा इस अवसर पर सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने संबोधन में डॉ. बेहेरा ने शांतनु कुमार आचार्य और बीणापाणि महांति के साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए कहा कि वैसे तो दोनों ही लेखक समकालीन हैं, लेकिन उनके लेखन दो अलग-अलग धरातल पर हैं। एक जहाँ गहरे पैठकर मानव-चेतना के आंतरिक यथार्थ को बाहर लाते हैं वहीं दूसरे बेजुबानों एवं सताए हुओं की यातना और व्यथा को आवाज देते हैं। श्रीमती महांति ने कथा लेखन की अपनी विधा पर बात की, साथ ही, समकालीन सामाजिक परिदृश्य में स्त्री रचनाकारों की भूमिका पर भी बोलीं।

केंद्रपाड़ा जिला साहित्य परिषद के अध्यक्ष प्रो. नंद किशोर परीडा ने अतिथियों का परिचय दिया और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास को केंद्रपाड़ा जैसे ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे

कार्यक्रम के आयोजन हेतु धन्यवाद दिया। श्री अतुल बल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ओड़िया साहित्य के प्रख्यात आलोचक प्रो. वैष्णव चरण सामल ने की। उन्होंने अपने संबोधन में लोकार्पित पुस्तकों के विविध आयामों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर न्यास से प्रकाशित चार पुस्तकों का लोकार्पण हुआ जिनमें तीन मूल और एक अनूदित पुस्तक थी। पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं : *शांतनु कुमार आचार्यंका श्रेष्ठ गल्प* (संपा. : प्रो. वैष्णव चरण सामल), *बीपापाणि महांतिंक श्रेष्ठ गल्प* (संपा. : डॉ. बिजोयानंद सिंह), *ओड़िया प्रकाशनारा इतिहास* (पठाणि पटनायक) तथा *स्वाधीनता परबर्ती हिंदी क्षुद्रगल्प* (संपा. : कमलेश्वर) अनु. : बिलासिनी महांति। पुस्तकों का लोकार्पण मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का समन्वय राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में ओड़िया भाषा संपादक डॉ. प्रमोद सर ने किया।

पुस्तक परिचय

हिंदी बाल साहित्य के शिखर व्यक्तित्व
प्रकाश मनु
पृ. 240 ₹ 176
प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, लोदी रोड, नई दिल्ली-03
हिंदी बाल साहित्य के रचनाकार तो बहुतेरे हैं, पर शिखर व्यक्तित्व चुनिंदा ही हैं। स्वयं ही एक चर्चित और शिखर बाल साहित्यकार द्वारा इस अछूते विषय पर लेखन बाल साहित्य के अध्येताओं के लिए किसी शोध ग्रंथ से कम नहीं है। प्रेमचंद, हरिऔध, गुप्त, दिनकर समेत 25 व्यक्तित्व के अवदानों को समेटा गया है यहाँ।

ऐसे हमारे हरदा (उपन्यास)
प्रदीप पंत; पृ. 208 ₹ 350
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
हरदा (हर दा) यानी हरीश चंद्र पांडे–उपन्यास के केंद्रीय पात्र। कूर्मांचल की पृष्ठभूमि पर केंद्रित यह उपन्यास इस पर्वतीय भूभाग के सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारों से लेकर स्वतंत्रता संघर्ष तक की गाथा कहता है। अपनों के बीच प्रायः उपेक्षित रहने वाले हरदा को बाद में गंभीरता से लिया जाने लगता है।

कोई तो जगह हो (कविता संग्रह)
अरुण देव; पृ. 144 ₹ 250
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
'अब भी अगर शब्दों को सलीके से बरता जाए / उन पर विश्वास जमता है'। अरुण देव की कविताएँ समकालीन हिंदी कविता के अंचल में अपनी संवेदनशील वैचारिकता के लिए जानी-सराही जाती हैं। उनकी कविताओं में आशंका है, उम्मीदें हैं; स्मरण और विस्मरण हैं; स्त्रियाँ हैं और प्रेम हैं, और किताबें भी।

इंतजार पाँचवें सपने का (कहानी संग्रह)
प्रेम भारद्वाज; पृ. 128 ₹ 200
सामयिक बुक्स, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन. एस. मार्ग, नई दिल्ली-02
अपने देश, काल, वातावरण, समाज और परिवेश के प्रति सजग और सचेतन रहकर जो बात कही जाए उसे आज भी पढ़ा जाता है, कल भी, बल्कि अनंत तक। बारह कहानियों का यह संग्रह कथाकार के संवेदनशील जागरूकता का प्रमाण ही है कि वह अपने समाज, परिवेश और राजनीति की धड़कनों को सुन सका, समझ सका और गुन सका।

जिंदगी के लिए ही (कविता संग्रह)
रिपुसूदन श्रीवास्तव; पृ. 72 ₹ 150
राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
कवि के लंबे जीवनानुभव का परिणाम है यह कविता संग्रह। सहज, सरल भाषा में गूढ़ से गूढ़ बात को भी कह देने का कौशल है यहाँ। कविता केवल कविता नहीं वरन जीने का एक सलीका भी है–इस संग्रह को पढ़कर इसे जाना जा सकता है।

एनकाउंटर ए लव स्टोरी तथा अन्य प्रेम कहानियाँ
श्याम सखा 'श्याम'
पृ. 120 ₹ 200
सुहानी बुक्स, भूतल, 109, ब्लॉक बी, प्रीत विहार, दिल्ली-92
21 कहानियों का संकलन–प्रेम के अहसास के मुख्य स्वर के साथ जीवन के विविध रूपों, क्षेत्रों, अंचलों तक फैला-पसरा है इन कहानियों का कैनवास। ये कहानियाँ हमारे मन, मिजाज और समाज के उन कोनों-अंतरों तक जाती हैं जहाँ अन्यथा हम कभी जाने की नहीं सोचते या नहीं जा पाते।

गुरु-दक्षिणा (कहानी संग्रह)
संजीव जायसवाल 'संजय'
पृ. 176 ₹ 300
परमेश्वरी प्रकाशन, बी-109, प्रीत विहार, दिल्ली-92
हृदयस्पर्शी व मनभावन ग्यारह प्रेम-कहानियों का रोचक संग्रह। समाज में प्रेम के मानक बदल रहे हैं। प्रेम अब वैसा ही नहीं रहा जैसा कुछ वर्षों पहले था। फास्टफूड की तरह प्रेम भी 'एन्ज्वाय' किया जाने वाला किसी 'वस्तु' की तरह हो गया है। इस संग्रह में प्रेम को अनेक कोणों से देखने-परखने की कोशिश है।

पुतले पर गुस्सा (कविता संग्रह)
मिथिलेश श्रीवास्तव
पृ. 88 ₹ 150
शिल्पायन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 10295, लेन नं. 1, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-32
आज जबकि इस दुनिया में दुनियाभर के दुख, छल, छलावा, कटुता और वैमनस्यता फैली-पसरी है कहीं-न-कहीं उम्मीदों के कंदील भी जल रहे हैं। मिथिलेश की कविताओं में छोटी-छोटी चीजें साधारण ढंग से आती हैं, लेकिन अंत तक जाते-जाते हम हैरान रह जाते हैं–अच्छा, यह ऐसा था!

जीने के लिए (उपन्यास)
सरिता शर्मा
पृ. 112 ₹ 200
सामयिक बुक्स, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन. एस. मार्ग, नई दिल्ली-02
भोगे हुए यथार्थ, और खासकर यंत्रणापूर्ण यथार्थ को उकेरना सहज और आसान नहीं होता। अपने 'निज' को 'सार्व' बना देने का जोखिम कम ही लोग उठाते हैं, लेकिन लेखिका ने अपने इस आत्मकथात्मक उपन्यास में जो कुछ लिखा साफगोई से लिखा है। एक मामूली स्त्री के ताकतवर बनने की कथा है यहाँ।

लोक का अवलोकन (अध्ययन)
सूर्यकान्त त्रिपाठी; पृ. 160 ₹ 280
आर्य प्रकाशन मंडल, IX/221, सरस्वती भंडार, गाँधीनगर, दिल्ली-31
लोकसाहित्य, विशेषकर लोकगीतों का विशद अध्ययन है इस पुस्तक में। पुस्तक में प्रस्तुत निबंधों में से कुछ शोधपरक हैं, कुछ सिद्धांतसम्मत तो कुछ मौलिक। आंचलिकता / क्षेत्रीयता के आग्रह से दूर इन निबंधों में लोक की बातें हैं।

रामनाथपुरम पुस्तक मेला

रामनाथपुरम, तमिलनाडु में अब तक के पहले पुस्तक मेले का उद्घाटन तमिलनाडु के माननीय हस्तशिल्प एवं वस्त्र मंत्री श्री एस. सुंदरराज ने किया। अपने संबोधन में मंत्री महोदय बहुत छोटी उम्र से ही बच्चों में पठन आदत के विकास के महत्व पर बोले और अभिभावकों से आह्वान किया कि उन्हें बच्चों के लिए उसी तरह पुस्तकें खरीदनी चाहिए जैसे त्योहारों पर उनके लिए अन्य उपहार खरीदे जाते हैं।

उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. सी.एन. अन्नादुरई को याद करते हुए कहा कि जब वे अस्पताल में भर्ती थे तो कैसे उन्होंने डॉक्टरों से उनकी सर्जरी एक दिन के लिए टाल देने का अनुरोध किया, ताकि वे पढ़ी जा रही पुस्तक के शेष अंश को पढ़ पाएँ। उन्होंने कहा कि नेल्सन मंडेला, जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गाँधी जैसे महान नेतागण उन नेताओं में थे जिन्होंने कैद में रहते हुए काफी अध्ययन किया, क्योंकि पढ़ने के लिए उनके पास काफी समय होते थे। इस अवसर पर जिले के कलेक्टर, एसपी समेत अन्य अधिकारी भी बोले। उद्घाटन के बाद मंत्री महोदय न्यास के स्टॉल समेत विभिन्न स्टॉलों पर गए।

विदित हो कि जिला प्रशासन के सहयोग से रामनाथपुरम में पुस्तक मेले का 25 जनवरी से 2 फरवरी, 2014 तक आयोजन हुआ। अनेक लेखक और महत्वपूर्ण व्यक्ति पुस्तक मेले में आए और पुस्तकप्रेमियों से संवाद किया। लेखकों में शामिल थे–नान्जिल नादन, एस. रामकृष्णन, प्रो. गणसंबंदन, सुकि शिवम, जो डि क्रूज, एस. वेंकटेशन एवं डी. सेल्वराज।

महत्वपूर्ण आगंतुकों में शामिल थे, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम। उन्होंने कहा, ''पुस्तकें हमारी विरासत को अगली पीढ़ियों तक ले जाती हैं।'' डॉ. कलाम पुस्तक के संबंध में बोले, ''अच्छी पुस्तकें कल्पना को विकसित करती हैं, कल्पना सृजनात्मकता का विकास करती है और सृजनात्मकता सर्वोच्च, सोचने की शक्ति का विकास करती है। यह ज्ञान समाज में एक व्यक्ति को बुद्धिमान मनुष्य बनाता है।'' अपनी स्मृतियों में पीछे जाते हुए डॉ. कलाम ने चालीस के दशक (1946) में रामनाथपुरम में स्कूल में पढ़ाई के दिनों को याद किया। उन्होंने कहा कि पुस्तकों के प्रति उनके मन में 'थिरूक्कुरल' नामक पुस्तक पढ़कर आकर्षण पैदा हुआ।

उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रत्येक व्यक्ति में प्रतिदिन कम-से-कम 30 मिनट पुस्तकें पढ़ने की आदत बनानी चाहिए। अपने घरों में छोटा-सा एक अच्छा पुस्तकालय बनाने का भी उन्होंने आह्वान किया। ''अगर अभिभावक 20 पुस्तकों वाला पुस्तकालय शुरू करते हैं तो उनके बच्चे 200 पुस्तकों वाला पुस्तकालय बना देंगे और उनके नाती-पोते इसे बढ़ाकर 2000 पुस्तकों का पुस्तकालय बना देंगे। इस प्रकार, एक अभिभावक अपने बच्चों और आगामी पीढ़ियों के लिए पुस्तकों का एक समृद्ध खजाना बनाने में अग्रणी भागीदार हो सकते हैं।'' डॉ. कलाम ने कहा।

पुस्तक मेले का समन्वय न्यास में तमिल भाषा संपादक श्री टी. मदन राज एवं उत्पादन अधिकारी श्री जी. रंगराजन ने किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के चार कर्मी सेवानिवृत्त

सुरिंदर कुमार प्रुथी : न्यास में 1975 में सेवारंभ करने वाले श्री प्रुथी को न्यास में पाँच प्रोन्नतियाँ मिलीं। एलडीसी से अपनी सेवा शुरू करने के उपरांत वे सन् 2000 में अधीक्षक एवं 2013 में सहायक निदेशक पद तक पहुँचे। इसी पद पर रहते हुए वे 28 फरवरी, 2014 को न्यास से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने इस लंबी अवधि (39 वर्ष) में न्यास में अनेक विभागों में अपनी सेवाएँ दीं।

डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' : न्यास में 1985 में संपादकीय विभाग में नियुक्ति (सहायक संपादक, पंजाबी भाषा) के उपरांत 1996 में संपादक तथा 2002 में मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक बने। डॉ. सिंह को अनुवाद क्षेत्र में साहित्य अकादेमी पुरस्कार भी मिल चुका है। वे अनेक पुस्तकों के लेखक एवं संपादक भी हैं। सेवानिवृत्ति 31 मार्च, 2014 को।

डॉ. दीपांकर गुप्ता : न्यास में 32 वर्षों तक सेवारत रहने के पश्चात डॉ. गुप्ता सहायक निदेशक पद तक प्रोन्नत होकर 31 मार्च, 2014 को सेवानिवृत्त हो गए। वे 1981 में नियुक्ति के उपरांत अनेक प्रोन्नतियाँ पाकर अंततः सहायक निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने इस अवधि में न्यास के अनेक विभागों में कार्य किया।

श्री सुरेश चंद पवार : न्यास में 1979 में नियुक्ति के उपरांत दो प्रोन्नतियाँ पाकर अंततः वे प्रवर श्रेणी लिपिक के पद से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने न्यास में अपनी 34 वर्षों की सेवा-अवधि में अनेक विभागों में काम किया। उन्होंने सन् 1982 तथा 1997 में प्रोन्नतियाँ पाईं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के सभी सहयोगी अपने इन सेवानिवृत्त साथियों के स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/4/2014

चिट्ठीघर

पाठकों को साहित्यिक सूचनाएँ देने का सार्थक प्रयास है। यह सिलसिला चलता रहे, ताकि पाठकों का साहित्य के प्रति रुचि बढ़े।
प्रकाश भानु महतो, सरायकेला, झारखंड

देशभर में साहित्यिक गतिविधियों के विवरणों से भरे *संवाद* के अंक ज्ञानवर्धक एवं सूचनाप्रद होते हैं। **डॉ. शंकर देव भिमानी,** नई दिल्ली

संवाद सूचना एवं ज्ञान का अथाह भंडार है। **जगीर चंद्र,** बैलपोखरा, नैनीताल, उत्तराखंड

पुस्तक संस्कृति के लिए, मेरी है फरियाद / प्रचार-प्रसार व चेतना जगा रहा *संवाद*।
पुस्तकालयों पर यदि, दे सरकारें ध्यान / पढ़ने की संस्कृति का, उत्तम यह स्थान।
सबको मिले पुस्तकें तभी पूर्ण अभियान / संभव होगा तभी जब बढ़े ग्रंथालय शान।
गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

समस्त गतिविधियों से अवगत हुआ। विभिन्न स्थलों पर आयोजित पुस्तक मेलों का विवरण पढ़कर मन प्रसन्न होता है। बड़ी अच्छी-अच्छी बातें *संवाद* में छपती हैं।
डॉ. रामसुमेर यादव, लखनऊ, उ.प्र.

संवाद पुस्तकीय संस्कृति का जिस प्रकार से प्रचार-प्रसार कर रहा है वह गहन प्रणम्य है। यह यथार्थ है कि जब तक पढ़ने की संस्कृति अस्तित्व में रहेगी तब तक निश्चित रूप में समाज बौद्धिक रूप से संपन्न रहेगा। **प्रो. शरद नारायण खरे,** मंडला, म.प्र.

विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस
23 अप्रैल, के अवसर पर
दरभंगा साहित्यिक कार्यक्रम
संगोष्ठी एवं पुस्तक लोकार्पण, 23 अप्रैल, 2014
आयोजक : **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत**

सबको पुस्तक, सबको ज्ञान **मनाएँ विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल**
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का अभियान! **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के संग**

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद पत्रिका के स्वामित्व संबंधी घोषणा

प्रपत्र — IV
(कृपया नियम-8 देखें)

प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	सतीश कुमार
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हाँ
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
संपादक/कार्यकारी संपादक	:	दीपक कुमार गुप्ता
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हाँ
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
समाचार-पत्र पर स्वामित्व रखने वाले व्यक्ति और साझीदार अथवा पूरी पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयरधारियों के नाम एवं पते	:	नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

मैं, सतीश कुमार, एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।

सतीश कुमार
दिनांक : 01 अप्रैल, 2014 (प्रकाशक का हस्ताक्षर)

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक/कार्यकारी संपादकः दीपक कुमार गुप्ता।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070